

**प्रेस विज्ञप्ति**

आईआईएमए के मिश्रा वित्तीय बाज़ार एवं अर्थव्यवस्था केंद्र द्वारा चलाया गया एक अध्ययन[[1]](#footnote-1) : बैंक ऋण संविभाग के लिए आर्थिक अनिश्चितता के निहितार्थ

अक्टूबर 20, 2020 | अहमदाबाद :

**सारांश :**

आईआईएमए के मिश्रा वित्तीय बाज़ार एवं अर्थव्यवस्था केंद्र के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक ताजा अध्ययन में 40 विकसित और विकासशील देशों के बैंक-स्तरीय डेटा का उपयोग करके घरेलू और फर्म ऋणों पर बैंक क्रेडिट की संरचना पर आर्थिक अनिश्चितता के प्रभाव का विश्लेषण किया गया।

अध्ययन में पाया गया है कि अधिकतर आर्थिक अनिश्चितता बैंकों के ऋण संविभाग में घरेलू ऋण के सापेक्ष हिस्सेदारी में वृद्धि से जुड़ी है। बैंकों द्वारा अपने ऋण संविभाग के समग्र जोखिम को कम करने के प्रयासों के परिणामों की संभावना से क्रेडिट की संरचना में यह परिवर्तन होता है, क्योंकि कॉरपोरेट ऋणों को आम तौर पर घरेलू ऋणों की तुलना में जोखिम के रूप में देखा जाता है। घरेलू ऋणों की तरफ यह बदलाव कमजोर-पूँजीकृत बैंकों के लिए अधिक स्पष्ट है, जो आर्थिक झटकों के दौरान अधिक जोखिम का सामना कर सकते हैं, और बड़े बैंकों के लिए, यह जटिल व्यवसाय मॉडलों और अधिक बाजार-आधारित गतिविधियों के कारण जोखिम भरा हो सकता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि बैंक क्रेडिट संरचना में ये बदलाव आपूर्ति-संचालित होने की संभावना है।

बैंक ऋण देने वाले विभागों में देखा गया बदलाव सूक्ष्म स्तर पर वित्त पोषण के परिणामों पर व्यापक आर्थिक वातावरण में परिवर्तन के प्रभाव की बेहतर समझ देता है। इन निष्कर्षों का व्यापक नीति और नियामक परिप्रेक्ष्य से एक निहितार्थ है। दुनिया भर में बैंकिंग नियम, आमतौर पर पूँजी पर्याप्तता के लिए आधारभूत मानदंडों पर आधारित होते हैं, इसलिए बैंकों को अपने कुल ऋण के अनुपात में पर्याप्त जोखिम भारित पूँजी की आवश्यकता होती है। अधिक अनिश्चितता के दौरान उच्च पूँजी अनुपात वाले बैंक अपनी क्रेडिट संरचना को घटाने की हद तक बदल देते हैं और कॉर्पोरेट क्षेत्र में क्रेडिट का प्रवाह बनाए रखने के लिए पूँजी नियमों के महत्व के लिए तर्क को मजबूत करते हैं।

यह अनुसंधान विशेष रूप से, अभी चल रही कोविड-19 महामारी को ध्यान में रखते हुए महत्वपूर्ण है जिसने दुनिया भर में अत्यधिक उच्च आर्थिक अनिश्चितता को जन्म दिया है। हालांकि यह अध्ययन एक क्रॉस-कंट्री फ्रेमवर्क का उपयोग करके आयोजित किया गया था, फिर भी भारतीय संदर्भ में अध्ययन के निष्कर्षों का महत्व है। भारत के लिए एक निहितार्थ यह है कि आर्थिक अनिश्चितता के इन समय के दौरान बैंकिंग प्रणाली में बलाघात हुई परिसंपत्तियों और जोखिम के फैलाव की मात्रा में अनुमानित वृद्धि के साथ, समय पर बैंकों के पुनर्पूंजीकरण से कॉर्पोरेट क्षेत्र में पर्याप्त ऋण प्रवाह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी और भारत के आर्थिक सुधार की सुविधा होगी।

इसकी पूरी रिपोर्ट <https://www.iima.ac.in/c/document_library/EPU_BankLoanPortfolios.pdf> से प्राप्त की जा सकेगी।

मीडिया प्रश्नों के लिए, कृपया संपर्क करें :

मिताली नायडू

कार्यकारी, जनसंपर्क

फोन : (सेल) +91-7069074816, (कार्यालय) +91-79-7152 4684, ईमेल : [pr@iima.ac.in](mailto:pr@iima.ac.in)

1. इस अनुसंधान का आयोजन आईआईएम अहमदाबाद में प्रोफ़ेसर संकेत महापात्र (अर्थशास्त्र संकाय) और सिद्धार्थ एम. पुरोहित (वित्त एवं लेखांकन में पीएचडी छात्र) द्वारा किया गया था। [↑](#footnote-ref-1)